

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 2



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 4

सृष्टि का प्रक्रम

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: सूत गोरस्वामी ने कहा :
शुकदेव गोरस्वामी से आत्मा के सत्य
के विषय में बातें सुनकर, उत्तरा के
पुत्र महाराज परीक्षित ने आस्थापूर्वक
अपना ध्यान भगवान् कृष्ण में लगा
दिया।

श्लोक 2: भगवान् कृष्ण के प्रति
एकनिष्ठ आकर्षण के फलस्वरूप
महाराज परीक्षित ने अपने निजी
शरीर, अपनी पत्नी, अपनी सन्तान,
अपने महल, अपने पशु, हाथी-घोड़े,

अपने खजाने, मित्र तथा सम्बन्धी
और अपने निष्कंटक राज्य के प्रति
प्रगाढ़ ममता त्याग दी।

श्लोक 3-4: हे महर्षियो, महात्मा
महाराज परीक्षित ने भगवान् कृष्ण के
विचार में निरन्तर लीन रहते हुए,
अपनी मृत्यु को आसन्न जानकर,
सारे सकाम कर्म अर्थात् धर्म के कार्य,
आर्थिक विकास तथा इन्द्रिय तृप्ति
त्याग दिए और कृष्ण के लिए सहज
प्रेम में अपने को दृढ़ता से स्थिर कर
लिया। तब उन्होंने इन सारे प्रश्नों को
उसी तरह पूछा जिस तरह तुम सब
मुझसे पूछ रहे हो।

श्लोक 5: महाराज परीक्षित ने कहा : हे विद्वान ब्राह्मण, आप भौतिक दूषण से रहित होने के कारण सब कुछ जानते हैं, अतएव आपने मुझसे जो भी कहा है, वह मुझे पूर्ण रूप से उचित प्रतीत होता है। आपकी बातें क्रमशः मेरे अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर रही हैं, क्योंकि आप भगवान् की कथाएँ कह रहे हैं।

श्लोक 6: मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि भगवान् किस प्रकार अपनी निजी शक्तियों से इस रूप में इन दृश्य ब्रह्माण्डों की सृष्टि करते हैं,

जो बड़े से बड़े देवताओं के लिए भी अचिन्त्य हैं।

श्लोक 7: कृपया बतायें कि सर्व-शक्तिमान परमेश्वर किस तरह अपनी विभिन्न शक्तियों तथा विभिन्न अंशों को इस व्यवहार जगत के पालन करने में लगाते हैं और एक खिलाड़ी के खेल की तरह फिरसे इसे समेट लेते हैं?

श्लोक 8: हे विद्वान ब्राह्मण, भगवान् के दिव्य कार्यकलाप अद्भुत हैं और वे अचिन्त्य प्रतीत होते हैं, क्योंकि अनेक विद्वान पंडितों के

अनेक प्रयास भी उन्हें समझने में अपर्याप्त सिद्ध होते रहे हैं।

श्लोक 9: पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् एक हैं, चाहे वे प्रकृति के गुणों से अकेले कर्म करें या एकसाथ कई रूपों में विस्तार करें या कि प्रकृति के गुणों के निर्देशन हेतु बारी-बारी से विस्तार करें।

श्लोक 10: कृपया इन सारे संशयप्रद प्रश्नों का निवारण कर दें, क्योंकि आप न केवल वैदिक साहित्य के परम विद्वान एवं अध्यात्म में आत्मसिद्ध हैं, अपितु आप भगवान् के

महान् भक्त हैं अतएव आप भगवान् के ही समान हैं।

श्लोक 11: सूत गोस्वामी ने कहा : जब राजा ने शुकदेव गोस्वामी से इस प्रकार प्रार्थना की कि वे भगवान् की सृजनात्मक शक्ति का वर्णन करें, तो उन्होंने इन्द्रियों के स्वामी (श्रीकृष्ण) का ठीक से स्मरण किया और उपयुक्त उत्तर देने के लिए इस प्रकार बोले।

श्लोक 12: शुकदेव गोस्वामी ने कहा : मैं उन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को सादर नमस्कार करता हूँ, जो भौतिक जगत की सृष्टि के लिए प्रकृति

के तीन गुणों को स्वीकार करते हैं। वे प्रत्येक शरीर के भीतर निवास करनेवाले परम पूर्ण हैं और उनकी गतियाँ अचिन्त्य हैं।

श्लोक 13: मैं पुनः पूर्ण जगत-रूप तथा अध्यात्म-रूप उन भगवान् को सादर नमस्कार करता हूँ, जो पुण्यात्मा भक्तों को समस्त संकटों से मुक्ति दिलानेवाले तथा अभक्त असुरों की नास्तिक मनोवृत्ति की वृद्धि को विनष्ट करनेवाले हैं। वे सर्वोच्च आध्यात्मिक सिद्धि-प्राप्त योगियों को उनके विशिष्ट पद प्रदान करने वाले हैं।

श्लोक 14: मैं उन्हें सादर नमस्कार करता हूँ जो यदुवंशियों के संगी हैं और अभक्तों के लिए सदैव समस्या बने रहते हैं। वे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जगत्‌ओं के परम भोक्ता हैं, फिर भी वे वैकुण्ठ स्थित अपने धाम का भोग करते हैं। कोई भी उनके समतुल्य नहीं है, क्योंकि उनका दिव्य ऐश्वर्य अमाप्य है।

श्लोक 15: मैं उन सर्वमंगलमय भगवान् श्रीकृष्ण को सादर नमस्कार करता हूँ जिनके यशोगान, स्मरण, दर्शन, वन्दन, श्रवण तथा पूजन से

पाप करनेवाले के सारे पाप-फल
तुरन्त धुल जाते हैं।

श्लोक 16: मैं सर्व-मंगलमय
भगवान् श्रीकृष्ण को बारम्बार प्रणाम
करता हूँ। उनके चरण-कमलों की
शरण ग्रहण करने मात्र से उच्च कोटि
के बुद्धिमान जन वर्तमान तथा भावी
जगत की सारी आसक्तियों से
छुटकारा पा जाते हैं और बिना किसी
कठिनाई के आध्यात्मिक जगत की
ओर अग्रसर होते हैं।

श्लोक 17: मैं समस्त मंगलमय
भगवान् श्रीकृष्ण को पुनः पुनः सादर
नमस्कार करता हूँ, क्योंकि बड़े बड़े

विद्वान ऋषि, बड़े-बड़े दानी, यश-
लब्ध कार्यकर्ता, बड़े-बड़े दार्शनिक
तथा योगी, बड़े बड़े वेदपाठी तथा
बड़े-बड़े वैदिक सिद्धान्तों के बड़े-बड़े
अनुयायी तक भी ऐसे महान् गुणों को
भगवान् की सेवा में समर्पित किये
बिना कोई क्षेम (कुशलता) प्राप्त नहीं
कर पाते।

श्लोक 18: किरात, हूण, आन्ध्र,
पुलिन्द, पुलकश, आभीर, शुम्भ,
यवन, खस आदि जातियों के सदस्य
तथा अन्य लोग, जो पाप कर्मों में लिप्त
रहते हुए परम शक्तिशाली भगवान् के
भक्तों की शरण ग्रहण करके शुद्ध हो

सकते हैं, मैं उन भगवान् को सादर
नमस्कार करता हूँ।

श्लोक 19: वे परमात्मा हैं तथा
समस्त स्वरूपसिद्ध पुरुषों के परमेश्वर
हैं। वे साक्षात् वेद, धर्मग्रंथ (शास्त्र)
तथा तपस्या हैं। वे ब्रह्माजी, शिवजी
तथा कपट से रहित समस्त व्यक्तियों
द्वारा पूजित हैं। आश्चर्य तथा सम्मान
से ऐसे पूजित होनेवाले पूर्ण पुरुषोत्तम
मुझ पर प्रसन्न हों।

श्लोक 20: भगवान् श्रीकृष्ण, जो
समस्त भक्तों द्वारा पूज्य हैं, यदुवंश के
अंधक तथा वृष्णि जैसे समस्त
राजाओं के रक्षक तथा उनके यश हैं,

लक्ष्मी देवी के पति, समस्त यज्ञों के निर्देशक अतएव समस्त जीवों के अग्रणी, समस्त बुद्धि के नियन्ता, समस्त दिव्य एवं भौतिक लोकों के अधिष्ठाता तथा पृथ्वी पर परम अवतार (सर्वेसर्वा) हैं, वे मुझ पर कृपालु हों।

श्लोक 21: भगवान् श्रीकृष्ण ही मुक्तिदाता हैं। भक्त प्रतिपल उनके चरण-कमलों का चिन्तन करके और महापुरुषों के चरणचिन्हों पर चलते हुए समाधि में परम सत्य का दर्शन कर सकता है। तथापि विद्वान् ज्ञानीजन उनके विषय में अपनी

सनक के अनुसार चिन्तन करते हैं।
ऐसे भगवान् मुझ पर प्रसन्न हों।

श्लोक 22: जिन्होंने सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा के हृदय में शक्तिशाली ज्ञान का विस्तार किया और सृष्टि तथा अपने विषय में पूर्ण ज्ञान की प्रेरणा दी और जो ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुए प्रतीत हुए, वे भगवान् मुझ पर प्रसन्न हों।

श्लोक 23: ब्रह्माण्ड के भीतर लेटकर जो तत्त्वों से निर्मित शरीरों को प्राणमय बनाते हैं और जो अपने पुरुष-अवतार में जीव को भौतिक गुणों के सोलह विभागों को, जो जीव

के जनक रूप हैं अधीन करते हैं, वे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् मेरे प्रवचनों को अलंकृत करने के लिए प्रसन्न हों।

श्लोक 24: मैं साक्षात् वासुदेव के अवतार उन श्रील व्यासदेव को सादर नमस्कार करता हूँ जिन्होंने वैदिक शास्त्रों का संकलन किया। शुद्ध भक्तगण भगवान् के कमल सदृश मुख से टपकते हुए अमृतोपम दिव्य ज्ञान का पान करते हैं।

श्लोक 25: हे राजन्, नारद द्वारा पूछे जाने पर प्रथम-जन्मा ब्रह्माजी ने इस विषय में ठीक वही बात बतलाई जो भगवान् ने अपने पुत्र (ब्रह्मा) से

प्रत्यक्ष कही थी जो जन्म से ही वैदिक
ज्ञान से संपृक्त थे।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव